मान्यता क्रमांक : UP/636/17/2023

: 9598423617

मृदंग संगीत अकेडमी

(प्रयाग संगीत समिति से मान्यता प्राप्त)

गायन, वादन व नृत्य (शास्त्रीय व पाश्चात्य) का स्तरीय संस्थान

संगीत संकाय के गुरूजनों की मुद्रा अभिव्यक्ति

कार्यालय : मृदंग संगीत अकेडमी

कचेहरी रोड, रायबरेली (उ0प्र0)

प्रयाग संगीत समिति के द्वारा मान्य कोर्सेज

कोर्स	अवधि	मान्य
प्रवेशिका	–	–
प्रभाकर	1 वर्ष	कक्षा 12
विशारद	3 वर्ष	ग्रजुएशन
निपुण	1.5 वर्ष	पोस्ट ग्रेजुएशन

उद्देश्य :

मृदंग संगीत अकेडमी का श्रीगणेश समाज में संगीत प्रेमियों, बच्चों की रुचि व उनकी ललक को महसूस करते हुए की गई है। संगीत मनीषियों का मानना है कि संगीत सकारात्मकता का बेहद शक्तिशाली माध्यम है जो वर्तमान परिवेश में बच्चों में कम हो रही शारीरिक प्रतिरोधक क्षमता को सुदृढ़ करता है तो दूसरी ओर प्रतियोगात्मक क्षमता के साथ–साथ उनमें आत्म विश्वास का वर्धन कर बहुमुखी प्रतिभा को निखारने में महती भूमिका निभाता है।

अकेडमी का उद्देश्य बच्चों के समग्र विकास के साथ–साथ ललित कलाओं में जागरूकता व रुचि को बढ़ावा देना व मान्यता प्राप्त स्थापित संस्थानों से स्वीकृत संगीत पाठ्यक्रमों पर आधारित पारंगत शिक्षकों के सानिध्य में लिखित व प्रयोगात्मक परीक्षाओं द्वारा समाज में स्पर्धा के बल पर संगीत के क्षेत्र में स्वयं को स्थापित करना है।

संगीत – एक तपस्या :

संगीत एवं अध्यात्म को भारतीय संस्कृति की रीढ़ मान सकते हैं। एक ओर भारतीय संस्कृति आध्यात्म प्रधान रही है और संगीत आध्यात्म का सुगम पथ माना जाता है, तो वहीं दूसरी ओर संगीत एक योग ही नहीं वरन् एक उपासना भी मानी गई है। मीरा, तुलसी, सूरदास व कबीर जैसे कवियों ने भक्ति की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति की है, फलत : संगीत को ईश्वर प्राप्ति का सुगम मार्ग भी माना गया।

"यकीनन संगीत अपूर्ण है – गायन, वादन व नृत्य तीनों के समावेश के बिना और तीनों संगीत के रस–तान–लय के लिए स्वाभाविक जरूरत हैं।"

–: कोर्सेस/पाठ्यक्रम :–

सर्टिफिकेट कोर्स/वोकेशनल कोर्स : (अवधि 3 माह)

रुचि व सीमित समयावधि के दौरान बच्चों में किसी एक विधा या बहुविधाओं में उनके सूक्ष्म ज्ञान के साथ–साथ संस्थान प्रमाण पत्र दिया जायेगा।

विधा 1– पाश्चात्य नृत्य :

इस विधा में छात्रों को मुख्यत: 6 प्रकार की पाश्चात्य नृत्य की बारीकियों को पिरोया जाता है।

- ओल्ड स्कूल
- हाउस
- लॉकिंग
- ब्रेकिंग
- पॉपिंग
- क्रम्प

साथ ही इसमें कोरियोग्राफी, मेडिटेशन व स्ट्रेचिंग सेसन द्वारा संगीत प्रेमियों में तारतम्यता लाई जाती है।

विधा 2– शास्त्रीय नृत्य :

इस विधा द्वारा बच्चों में बैलेंसिंग, फुटवर्क, भाव व मुद्रा के समावेश को दर्शित किया जाता है।

- पादहंत
- चाल
- नृत्यकर्माह:
- चक्र
- अंगशुद्धि
- गुरू वंदना

आदि मुख्य स्टेप हैं।

विधा 3– गायन :

इस विधा में बच्चों को स्वरों के अभ्यास द्वारा उनमें लय व तान को पिरोकर सजाया जाता है।

- अलंकार
- तान
- अलाप
- गमक

आदि गायन के मुख्य बिन्दु हैं।

विधा 4– वादन :

इस विधा में बच्चों को वाद्य यंत्रों व उनके द्वारा उत्पन्न स्वर के बारे में अभ्यास कराया जाता है।

- ढोलक
- पियानो (आर्गन)
- गिटार
- ड्रम सेट
- तबला

आदि वाद्ययंत्र मुख्यत: संगीत में अपनी महती भूमिका निभाते हैं जिनके गुढ़ रहस्यों की कला संगीत में विशेष रस उत्पन्न करता है।

शुल्क :

– रजिस्ट्रेशन/प्रवेश फार्म	:	50 रु0
– प्रवेश शुल्क	:	100 रु0
– कोर्स/विधा शुल्क (एक विधा के लिए)	:	500 रु0 (5 वर्षीय बालक/बालिका के लिए)
(उम्र के अनुसार उम्र मानक 01.4.2023)	:	600 रु0 (6 वर्षीय बालक/बालिका के लिए)
	:	700 रु0 (7 वर्षीय बालक/बालिका के लिए)

नोट : दो विधा के लिए 250 रु0 अतिरिक्त देय होंगे।